एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 09 (सितम्बर, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

गोभी वर्गीय सब्जियों की जैविक खेती से संबंधित कृषि क्रियाएं

*सिमरन चौधरी एवं विभूति
पीएचडी शोधार्थी, सब्जी विज्ञान, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: simranghoslya@gmail.com

गोभी वर्गीय सब्जियों में मुख्यतः बन्द गोभी और फूल गोभी की फसलें आती हैं। इस सब्जियों की काश्त के लिए मृदा की पी.एच. रेंज 6-6.5 है और जैविक कार्बन एक प्रतिशत से ज्यादा होना चाहिए। ऐसी भूमि बंदगोभी और फूल गोभी की खेती के लिए उपयुक्त होती है। मृदा में पी.एच. स्तर, जैविक कार्बन, गौंण पोषक तत्व (एन.पी.के. -नाइट्रोजन, फास्फोरस पोटाष) खेत में सूक्ष्म जीवों के प्रभाव की मात्रा की जांच के लिए वर्ष में एक बार मृदा परीक्षण करना जरूरी है। यदि मृदा में जैविक कार्बन एक प्रतिशत से कम पाई जाती है, तो खेत में 25-30 टन/है0 की दर से कार्बनिक खाद डाली जाए और खाद को अच्छी तरह खेत में मिलाने के लिए खेत की 2-3 बार जुताई की जाए।

अनुमोदित किस्में

बंदगोभी- प्राइड ऑफ इंडिया, गोल्डन एकड़, पूसा डूम हैड, पूसा मुक्ता।
फूल गोभी- अर्ली कुनवारी, इम्पूवड जापानीज, पूसा स्नोबौल-1, पूसा स्नोबॉल के-1, पालम उपहार।

बीज दर

बंद गोभी- लगभग 500-700 ग्रा./है0 और 40-45 ग्राम/बीघा गोभी का बीज नर्सरी में बिजाई के लिए पर्याप्त होता है। फूल गोभी-
अगेती किस्मों के लिए- 750 ग्राम/है0 (60 ग्राम/बीघा)
पछेती किस्मों के लिए- 500 से 625 ग्राम/है0 (40-50 ग्राम/बीघा)

बीज उपचार

5 प्रतिशत ट्राईकोडर्मा घोल के साथ बीज उपचार किया जाए और बुवाई से पहले छाया में सुखाया जाए।

बीज की दूरी (नर्सरी)

बीज की दूरी 1-2 सें.मी. गहराई में 10 सें.मी. अलग पंक्ति में 4-5 सें.मी. में बीज डाला जाए।

पौध उपचार

प्रतिरोपण से एक दिन पहले पौध पर 1 मि.ली. मिश्रण की दर से बी.टी. (*बैसिलस थूरीनजेनसिस*) छिड़का जाए। प्रतिरोपण के समय पौध के जड़ वाले हिस्से को 1 प्रतिशत बोरडोक्स मिश्रण या इससे गड्ढे को भर दें।

प्रतिरोपण और दूरी (मुख्य खेत)

आम तौर पर 4-5 सप्ताह पुराने स्वस्थ पौध को मुख्य खेत में प्रतिरोपण के लिए चुना जाता है। मेंढ और नालियां बनाई जाती हैं। अगेती किस्मों के लिए 45 सें.मी. x 30 सें. मी. तथा पछेती किस्मों के लिए 60 सें.मी. X 45 सें. मी. की दूरी रखी जाए।

सिंचाई और पानी की आवश्यकता

कुशलतम तरीके से जल उपयोग और संरक्षण की दृष्टि से टपका सिंचाई बेहतर है। यदि खुली सिंचाई का इस्तेमाल किया जाता है तो जलमग्नता से बचने पर पूरा ध्यान दिया जाए। रोपण से पहले सिंचाई की जाए। तीसरे दिन 'जीवनवर्धक - सिंचाई' (लाईफ

इरीगेशन) की जाए। इसके बाद प्रत्येक 10-15 दिन में सिंचाई की जाए। जब शीर्ष परिपक्व स्थिति में आ जाएं तो इनके टूटने को रोकने के लिए सिंचाई बंद कर दें।

संवर्धन क्रियाएं और खरपतवार प्रबंधन

नियमित रूप से हाथ से खरपतवार निकालने और मिट्टी चढ़ाने का काम किया जाना चाहिये। खरपतवार को नष्ट करने तथा नमी संरक्षण के लिए पंक्तियों के बीच शुष्क फसल/निकाले गए घास अपषिष्ट से पलवार बिछाई जा सकती है। खरपतवार प्रबंधन की आवश्यकता फसल वृद्धि के 60 दिन तक होती है।

फसल कटाई/तुड़ाई

ठोस फूलों/कंदों को जमीन की सतह से चाकू या दराटी से काटा जाता है। फसल कटाई/तुड़ाई के दौरान बाहरी परिपक्व बिना मुड़े पत्तों को हटा दिया जाए। यदि यहां कोई लम्बा ठोस ढूंठ है तो उसे भी हटा दें। इन शीर्षों को आकार और गुणवत्ता के अनुसार वर्गीकृत किया जाए और बोरी या प्लास्टिक क्रेट में पैक करके ट्रक में भरकर बाजार में लाया जाता है। उत्पाद की तुड़ाई शाम को या सुबह-सुबह की जाए और फलों को छाया वाले स्थान या कमरे में रखा जाए जहां अच्छा वायु संचरण हो।

पैदावार/उपज

बंदगोभी-
अगेती प्रजातियां-25-30 टन/हैक्टेयर
पछेती प्रजातियां-40-50 टन/हैक्टेयर
फूलगोभी-
अगेती प्रजातियां-19-25 टन/हैक्टेयर
पछेती प्रजातियां-17-20 टन/हैक्टेयर

बीज की कटाई व सुखाना

जब फलियां पक जाएं तो उन्हें शाखा सहित काट लें तथा इनके गठे बनाकर ढेर में सुखा लें तथा पूरे सूख जाने पर पूरे बीज की झड़ाई करें तथा बीज को सुखाकर पूरी तरह से सुरक्षित भंडार करें।

बीज प्राप्ति
बंदगोभी-
अगेती किस्में-

- 500-600 कि.ग्रा./है.
- (40-48 कि.ग्रा./बीघा)

पछेती किस्में

- 700-750 कि.ग्रा./है.
- (55-60 कि.ग्रा./बीघा)

फूलगोभीः
अगेती किस्में-

- 500-600 कि.ग्रा./हैक्टेयर
- (40-48 कि.ग्रा./बीघा)

पछेती किस्में-
300-400 कि.ग्रा./हैक्टेयर 24-32 कि.ग्रा./बीघा)